



Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate



ସମ୍ପାଦନା

Patron

Sridhar Patra, CMD

Editor-in-Chief

Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board

Lina Mohapatra
Shagufta Jabeen
Swayamprabha Rath
Roshan Pandey

Co-ordinator

Sabita Patnaik

Design Concept

Aswini Sutar

ଅପ୍ରେଲ-ଜୁନ 2020

प्रकाशक

नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से
राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱ କରୋନା ଭୂତାଣୁର ସଂକ୍ରମଣରେ ଆଜି ତ୍ରୁଷ୍ଟ । ଆଜି ଆମ୍ଭମାନଙ୍କ ସାମନାରେ ଏକ ବିରାଟ ଆହ୍ୱାନ ଆସି ଛିଡ଼ା ହୋଇଛି । ଏହି ଭୂତାଣୁକୁ ସାମନା କରିବା ପାଇଁ ପୃଥିବୀର ସମସ୍ତ ବୈଜ୍ଞାନିକ ମାନଙ୍କର ଚେଷ୍ଟା ଆଜି ବି ଫଳବତୀ ହୋଇପାରି ନାହିଁ । ପୃଥିବୀ ଯେତେବେଳେ ନିରାଶ

ଓ ହତାଶ ହୋଇଯାଇଛି ସେତେବେଳେ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱ ଭାରତକୁ ଏକ ଆଶାବାଦୀ ଦୃଷ୍ଟି ନେଇ ଚାହିଁରହିଛି । ଭାରତୀୟ ସାମାଜିକ ପରମ୍ପରା ଏ ରୋଗକୁ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବାକୁ ନଦେଇ ରୋକି ଦେଇପାରେ ବୋଲି ଆଲୋଚନା ହେଉଛି । ଅଭିବାଦନ ପାଇଁ ହାଣ୍ଡସେକ୍ ବଦଳରେ ନମସ୍କାର । ବାରମ୍ବାର ହସ୍ତ ପ୍ରଖ୍ୟାଳନ, ପୂର୍ଣ୍ଣ ସ୍ନାନ, ମୁଣ୍ଡ ଓ ମୁଖ ଇତ୍ୟାଦି ଢାଙ୍କିବାର ପଦ୍ଧତି, ତୁଳସୀ ରସ, ହଳଦୀ, ନିମ ଓ ଗୁଳୁଚି ଇତ୍ୟାଦିର ସେବନ ଓ ଲେପନ ସହିତ ପୂର୍ଣ୍ଣସିଦ୍ଧ ନିରାମିଷ ପାକ ଓ ଯୋଗ ପ୍ରାଣାୟାମ ମାଧ୍ୟମରେ ଶରୀରସ୍ଥ ରୋଗ ପ୍ରତିରୋଧକାରୀ ଶକ୍ତିର ବିକାଶ ବଳରେ ହିଁ ଏ ପ୍ରକାର ଅନେକ ଭୂତାଣୁ ଜନିତ ରୋଗକୁ ଆମେ ପରାସ୍ତ କରିଦେଇ ପାରିବା ବୋଲି ଆଜି ଧିରେ ଧିରେ ଏ ସ୍ୱର ପ୍ରଖର ହେବାରେ ଲାଗିଛି । ଭାରତୀୟ ପରିବାର ସଂରଚନାରେ ପରିବାରର ଭୋଜନ ବ୍ୟବସ୍ଥା, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଓ ପରିଚ୍ଛନ୍ନତା, ଅତିଥି-ଅଭ୍ୟାଗତ ଏବଂ ସଂସ୍କାର ଇତ୍ୟାଦିର ଦାୟିତ୍ୱ ଆଜି ବି ଘରର ନାରୀ ଉପରେ ନ୍ୟସ୍ତ ।

ଦେଶର ଓ ପୃଥିବୀର ଏ ପ୍ରକାର ଏକ ଘଡ଼ିସନ୍ଧି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଆମ ପାଇଁ କର୍ତ୍ତବ୍ୟର ଏକ ସୁତୀବ୍ର ଆହ୍ୱାନ ଅପେକ୍ଷା କରିଛି । ଆମର ସୀମିତ କ୍ଷେତ୍ରର ପରିଧି ଭିତରେ ବି ସଚେତନତାର ବାର୍ତ୍ତା ବାଣ୍ଟିବା ସହିତ ଆମ୍ଭମାନଙ୍କର ନିଜ ପରିବାର ଓ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବ ସମେତ ପଡ଼ୋଶୀ ମାନଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରଦାନ କରିବା ପାଇଁ ଆମେ ଆପ୍ରାଣ ଚେଷ୍ଟା କରି ପାରିବା । ଯେଉଁ ଭାରତର ନାରୀ ସ୍ୱୟଂ ଯମରାଜଙ୍କ ପାଖରୁ ବି ତା'ର ମୃତ ସ୍ୱାମୀର ଜୀବନକୁ ଫେରାଇ ଆଣିପାରେ ସେ ଦେଶର ନାରୀର ସଚେତନତା ଓ ନିଷ୍ଠା ସାମନାରେ କରୋନା ପରି ମହାମାରୀ ବି ଦିନେ ପରାସ୍ତ ହୋଇ ଫେରିଯିବ - ଏ କଥା କହିବା ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ଅତିଶୟୋକ୍ତି ହେବନାହିଁ ।

ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିରେ ନାରୀ ମାନଙ୍କ ଭୂମିକା ଅତି ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । କେଉଁଠି ନା କେଉଁଠି ଆମର ସୁଖ ସ୍ୱାଚ୍ଛନ୍ଦ୍ୟରୁ ସାମାନ୍ୟ କେଲେ କ୍ଷଣ ବାହାର କରି ନାଲକୋ ମହିଳା ସମିତିର ସମସ୍ତ ସଦସ୍ୟା କିଛି ସାମାଜିକ ଓ ସାମୁହିକ କାର୍ଯ୍ୟ ପାଇଁ ଦୃଢ଼ ସଂକଳ୍ପର ସହ ଆଗେଇ ଆସିଛନ୍ତି । କରୋନାକୁ ଦୂର କରିବା ପାଇଁ ଆମ ସମାଜରେ ଯେଉଁ ସଚେତନତା ଜାଗ୍ରତ ହୋଇଛି ଏବଂ ସେହି ଚେଷ୍ଟାରେ ନାରୀର ଭୂମିକା ଏକ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସ୍ୱାଗତଯୋଗ୍ୟ ପଦକ୍ଷେପ ।

“डर के आगे जीत है”

ସମ୍ପାଦକ ପାତ୍ର

संपादकीय

पूरा विश्व कोरोना विषाणु से त्रस्त है। आज हमारे सामने एक विराट आह्वान खड़ा हुआ है। इस विषाणु का सामना करने के लिए विश्व के सभी वैज्ञानिक अपनी कोशिशों में आज तक कामयाब नहीं हो पाए हैं। पूरी दुनिया निराश व हताश हो गई है। इस स्थिति में पूरा विश्व भारत को आशावादी नज़र से देख रहा है। भारतीय सामाजिक परंपरा इस रोग को आगे बढ़ने से रोक सकती है, ऐसी चर्चा हो रही है। अभिवादन के बदले नमस्कार, बार-बार हाथ धोना, पूर्ण स्नान, सिर व चेहरे को ढकने की पद्धति, तुलसी का रस, हल्दी, नीम, गिलोय इत्यादि का सेवन व लेपन करते हुए पूर्ण शाकाहारी भोजन व योग-प्राणायाम के माध्यम से शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर इस जैसे अनेक प्रकार के विषाणु जनित रोगों को हरा सकने की संभावना के स्वर मुखर हो रहे हैं। भारतीय परिवार संरचना में परिवार के भोजन की व्यवस्था, स्वास्थ्य और परिच्छन्नता, अतिथि सत्कार एवं संस्कार का दायित्व आज भी भारत की नारी के ऊपर है।

देश व पृथ्वी के इस प्रकार के मुश्किल भरे पल में हमारे लिए कर्तव्य के प्रति सजग रहने की अपेक्षा की जा रही है। अपने सीमित क्षेत्र में, अपनी परिधि के भीतर भी सतर्कता का संदेश बाँटने के साथ हमारे अपने परिवार व मित्र समेत पड़ोसियों को भी सुरक्षा प्रदान करने के लिए हम हर संभव कोशिश कर सकते हैं। जिस भारत देश की नारी स्वयं यमराज के पास से अपने मृत पति के प्राण लौटा ला सकती है, उस देश की नारी की सतर्कता व निष्ठा के सामने कोरोना जैसी महामारी भी एक दिन परास्त होकर लौट जाएगी - यह कहना किसी भी प्रकार से अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारतीय संस्कृति में नारी की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। कहीं न कहीं अपने सुख-सुविधा से बाहर आकर नालको महिला समिति की सभी सदस्य कुछ न कुछ सामाजिक और सामूहिक काम के लिए दृढ़ संकल्प कर आगे आ रही हैं।

कोरोना को दूर करने के लिए हमारे समाज में जिस चेतना को जागृत करने की आवश्यकता है। यह चेष्टा एक अत्यंत ही स्वागत योग्य पहल होगी।

“डर के आगे जीत है”

सस्मिता पात्र

खुशी



मेहमान हैं हम इस दुनिया के
दर्द देकर माँ को, यहाँ हम आए,
दर्द लेकर यहाँ से जाएँगे
बीच का यह सफर खुशियों से क्यों न भरें
सूरज अपनी रोशनी सबको बाँटता है
बादल गरजकर खुशियों की बारिश सबपर निछावर
करते हैं,
फूल अपनी खुशबू सबको देने में
अपना या पराया नहीं सोचते हैं
जिंदगी की खुशी, किसी को खुशी देने में होती है,
सत् कर्म कर, खुशी सबको बाँट
रास्तें खुद ही खुद खुशियों से भर जाएँगे
कोयल की तरह, गाना गा, मोर की तरह नाच
हिरण की तरह चंचल बन, तरंग की तरह लहरें बन
सूरज की तरह चमक इंद्रधनुष के रंग समेटकर
रोशनी तू सबको बाँट
जिंदगी कम दिन की मौहलत
भरकर दे सबको खुशियों की दौलत
सही मायने में यह खुशी जिंदगी की।

करबी कादम्बीनि कर
भुवनेश्वर

जन्म



कभी सोचती हूँ कौन हूँ, कहाँ से आई,
और मुझे कहाँ है जाना।
ये जन्म जो हुआ मेरा, इसे कैसे और कहाँ है बिताना,
इबादत से है सँवारना, या रिश्ते हैं बस निभाना।
लुभाती हैं मुझे दुनिया की रौनकें,
पर क्या मुझे है इस चकाचौंध में डूब जाना ?

ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना हूँ मैं,
फिर इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ क्यों गँवाना।
कहता है मन दूर कर दूँ, मन में बैठी सभी बुराइयों को,
परंतु मनुष्य हूँ मैं, मुश्किल बहुत है फरिश्ता बन जाना।
लेकिन कोशिश तो कर सकता है इंसान सँवरने की,
क्या पता खुदा ऐसे ही चाहता हो हमें आजमाना।
जन्म हुआ तो, दबे पाँव मृत्यु भी आ जायेगी,
काम तो कुछ ऐसा कर जाऊँ कि याद करे मुझे ज़माना।
दुआ यही है, जीवन में है कुछ ऐसा कर जाना,
मेरे ज़रिये ही सीख जाए कोई मुस्कुराना।
पता नहीं अब से पहले समय कितना व्यर्थ गँवाया मैंने,
पर अब चाहती हूँ हर पल को पुण्य के मोतियों से
सजाना।
डर के आगे जीत है, जानता है सारा ज़माना,
बस इतनी सी बात है जिसे दिल को है समझाना।

तबस्सुम
दामनजोड़ी

हे संगी साथी



मैंने सेब खाने के लिए तुम्हें नहीं उकसाया ,
गेहूँ के दाने भी मेरे बस में नहीं थे ,
कि छान कर चक्की में पीसूँ
और तंदूर झोंक कर रोटी पकाऊँ ,
साँप बिच्छू के तो नाम से मैं काँप जाती ।

हिरण-आखेट की प्रेरणा भी मैंने नहीं दी,
ये आपकी स्वेच्छा थी प्रभु !
मैं तो कूदते-फाँदते, कुलाँचे भरते,
पशु-पक्षियों को देख,
सदा मुस्कुराती ।

बनारसी जोड़े, स्वर्ण – आभूषण ,
हीरे की मुदी, काँच की चूड़ियाँ,
स्वयं को बँधा हुआ पाती,
रेशम और मोती की माला,
नर्म से अहसास दे जाती ।

सब विलास के साधन हैं,
आवश्यकता नहीं इन सबकी मुझे,
अगर कोई है तो ,
वो तुम हो जिसे मैंने,
जाना था, समझा था, चाहा था!!

नादिरा खान
दामनजोड़ी

धर्म युद्ध जरूरी है.....



द्वापर में हुआ महाभारत
पर आज भी उसका हल न मिला!

प्रश्न यह है युद्ध गर कोई हल नहीं
तो क्या है समाधान भला?

युद्धोपरान्त शान्ति कभी
होती नहीं है स्थायी,

अगर युद्ध का कोई डर नहीं तो
शान्ति का मतलब नहीं!

पाप, शाप की ताप से मानव आज मुक्त है,
धर्म की राह से भटक कर
अधर्म का मोहताज है!

समझो मर्म अगर धर्म का तो
धर्म अपेक्षित नहीं!

धर्म-च्युत को मर्म देना
भीष्म का भी प्रण नहीं!
(भीष्म की प्रतिज्ञा नहीं!)

युद्ध ही है जनक शान्ति का
और गर शान्ति राष्ट्र से मिट जाए।

युद्ध जरूरी हो जाता है
पुनः शान्ति स्थापन के लिए।

राष्ट्र-रक्षा के लिए क्या
अधर्म अपनाना जरूरी है?

धर्म ही प्राण राष्ट्र का
अब धर्मयुद्ध भी जरूरी है।

गीतांजली रथ
दामनजोड़ी

'डर के आगे जीत है' तपस्विनी दास के साथ साक्षात्कार



इस बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कैसे मनाये आलोचना करते समय, नालको महिला समिति की अध्यक्ष जी से एक प्रस्ताव मिला जो मन को छू गया, जो कि समय और अवसर को लेकर यथोचित था। दृष्टि दोष लेकिन प्रथम ओ.ए.एस. तपस्विनी दास को सम्मानित करना व उनकी जीवनचर्या को लेकर एक छोटा सा नाटक रूपान्तरण प्रस्तुत करना। उसके बाद शुरू हुआ मेरा कार्यक्रम, उनके साथ साक्षात्कार कर, मैंने शुरू किया एक नाटक "अंधकार का आलोक"।

23.2.2020 अपराह्न 4 बजे मैं और मेरे पति तपस्विनी दास के घर पहुँचे। उनकी माँ ने अत्यंत आग्रह पूर्वक हमारा स्वागत किया। उसके बाद तपस्विनी जी के साथ 1.30 घंटे तक बात-चीत हुई। उसी चर्चा का सारांश आपके सामने पेश करती हूँ।



प्रश्न- आपका नाम?

उत्तर- तपस्विनी दास, पर घर में सभी मुझे 'टुपुलि' नाम से बुलाते हैं।

प्रश्न- आपके पिता-माता का नाम?

उत्तर- माँ, श्रीमती कृष्णप्रिया महान्ति, और पिता का नाम श्री अरूण दास।

प्रश्न- क्या आप जन्म से दृष्टिहीन हैं?

उत्तर- नहीं मैं कक्षा 2 तक सामान्य छात्रों के विद्यालय में पढ़ रही थी, हालाँकि ऑप्टिक नर्व (Optic nerve reonstre) की परेशानी जन्म से थी। जब जरूरत पड़ी (धीरे-धीरे) मेरी आँख की रोशनी कम होती गयी। परन्तु ऑपरेशन के बाद मेरी आँख की रोशनी पूरी तरह से वापस नहीं आ सकी।

प्रश्न- उसके बाद आपको कैसा लगा?

उत्तर- हाँ, बहुत असुविधा महसूस हुई एवं कष्ट हुआ। हालाँकि डॉक्टर ने 6 महीने इंतजार करने के लिए कहा था, लेकिन इंतजार इतना लंबा होगा पता ही नहीं था।

प्रश्न- उसके बाद आपने पढ़ाई कैसे की?

उत्तर- 2 वर्षों के अंतर के बाद मैंने दृष्टि बाधित विद्यालय में फिर एक बार पढ़ाई शुरू की, ब्रेल पढ़ना लिखना अत्यंत कष्टदायक था।

प्रश्न- दृष्टि रहते समय और दृष्टि बाधित होने के बाद आपने कैसे लड़ाई की?

उत्तर- हाँ, संघर्ष बहुत ही कठिन था, लेकिन कड़ी मेहनत एवं स्वाध्याय के सामने सारी रुकावटें हार मान गईं। आठवीं, नवमी, दसवीं की पाठ्य पुस्तक ऑडियो बुक (audio book) से सुनकर खुद ब्रेल में लिखती थी और उसके बाद सहेलियाँ भी उससे उपकृत होती थी।

प्रश्न- चमत्कार! मानना पड़ेगा। और आपकी पसंद क्या है?

उत्तर- गीत गाना, हिंदुस्तान क्लासिकल (Hindustan classical) सीख रही हूँ, कहानी और कविता लिखती हूँ, सोशल नेटवर्किंग (Social networking) करती हूँ।

प्रश्न- सोशल नेटवर्किंग (Social networking) कैसे करती हैं?

उत्तर- मैंने अपने लैपटॉप (Laptop) को स्पीच इनेबल (Speech enable) कर रखा है, उसी से मुझे पढ़ाई

और सोशल साइट्स (Social sites) से ज्ञान प्राप्त करने में भी सुविधा होती है।

प्रश्न- आपने बहुत कष्ट करते हुए सोपान पर सोपान चढ़े हैं और रमादेवी विश्वविद्यालय में स्नातक डिग्री में टॉपर रहीं हैं उसके साथ आपने अपनी रुचि भी कायम रखी है और अब ओड़िशा प्रशासनिक सेवा में 161 रैंक (Rank) रख कर कीर्तिमान स्थापित किया है। आप दिव्यांग होते हुए भी दिव्य गुणों की अधिकारी हैं। आपको ओपीएससी (OPSC) उत्तीर्ण करके कैसा महसूस हो रहा है?

उत्तर- बहुत खुशी हो रही है कि मैंने अपने प्रथम कोशिश (first attempt) में ओपीएससी पास (OPSC crack) की है।

प्रश्न- इस सफलता का श्रेय किसको देंगी?

उत्तर- पहले मैं अपनी माँ को दूँगी, फिर उसके बाद अपने पापा को, मेरे दृष्टिहीन होने के नाते पापा मुझे हर एक जगह ले जाना -लाना करते हैं।

प्रश्न- आप राज्य प्रशासनिक सेवा में गयीं हैं तो प्राथमिकता किसको देंगी? ओड़िशा के लिए क्या करना चाहेंगी?

उत्तर- मुझे सरकार जिस किसी क्षेत्र का उत्तरदायित्व देगी मैं अपना 100% दूँगी। ओड़िशा कई सारे क्षेत्रों में पीछे है, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सुरक्षा, संप्रभुता, ग्रामीण विकास आदि। सरकार मुझे जो भी क्षेत्र देगी मैं मनोयोग से काम करूँगी एवं ओड़िशा को एक समृद्धशाली राज्य के रूप में देखना चाहूँगी।

प्रश्न- ऐसा आत्मविश्वास आपको कहाँ से मिला? इस कठिन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपको किसने प्रेरणा दी थी?

उत्तर- प्रेरणा तो माता-पिता से ही मिली थी, लेकिन आंतरिक प्रेरणा (internal inspiration) अपने अन्दर से ही आनी चाहिए और उसी प्रेरणा को मैं अपने अन्दर सृजित करती हूँ, जितनी भी तकलीफ आए मैं उस समस्या से बाहर आने का रास्ता निकाल ही लूँगी! (I will find the way out to overcome that difficulty.)

प्रश्न- आपसे अन्तिम प्रश्न, आपने अपने लक्ष्य में और कुछ हासिल करने का लक्ष्य जारी रखा है?

उत्तर- मेरा मूल लक्ष्य संघ लोक सेवा आयोग पास (UPSC crack) करना है, अभी यह मेरे लक्ष्य पथ का पहला सोपान मात्र है।

प्रश्न- आप अपनी साधना ऐसी ही बरकरार रखिए, ईश्वर आपकी सिद्धि प्राप्ति दिशा में सहायता करेंगे, आप अपने विश्वास और आशा की दिशा में कामयाब होंगी।

धन्यवाद, उससे पहले अपनी एक कविता सुना दीजिए -

उत्तर- कोशिश के बाद भी कभी मिल जाती है हार ,
पर कभी निराश होके बैठ न जाना मेरे यार

साक्षात्कार कर्ता -

श्रीमती सबिता पटनायक

भुवनेश्वर

गुलाब

किसी दिन किसी बाग में
देखा मैंने गुलाब एक
जिसमें थे काँटे अनेक
साथ में थी सुरभि पुरित
खिंची चली गई मैं उसकी ओर
किंतु तभी हवा ने छेड़ी रागिनी अपनी

जिसने बिखेर दी गुलाब की पंखुडियाँ सारी
दिल मेरा टूटा जैसे काँच का शीशा छूटा
फिर भी मैंने जोड़ लिया दिल के टुकड़ों को
पर न जोड़ पाई गुलाब की पंखुडियों को।

संगीता अग्रवाला
अनुगुळ

CAR RALLY ON INTERNATIONAL WOMEN'S DAY 8TH MARCH 2020

A car rally was organised by Seva Prayas Foundation on International Woman's Day on 8th March 2020 at Bhubaneswar. Four members of NALCO Mahila Samiti, Smt Smita Tripathy, Smt Namita Sahoo, Smt Nirupama Swain and Smt Suprava Panda participated in the rally under the able guidance of Smt Sasmita Patra, President NMS. The theme chosen was "Sensitive Women for Humanity" which included awareness on CORONA virus. The participants displayed various precautionary measures and stated the importance of "Healthy Namaste" and "Use of Sanitizer", etc. to beat the spread of virus, in the form of captions and quotes. The NMS team bagged the 1st Runners up with a cash award of Rs.5000.00.



Smita Tripathy
Bhubaneswar



Nirupama Swain
Bhubaneswar

This car Rally was a dream come true. It was a mesmerizing experience to convey message through a car rally on the present scenario. As a driver it was a big challenge for me to drive with the given rules. I am thankful to our dear Sasmita madam for planning this rally and helping us put another feather in the cap of NMS. Cheers to my team members.

We came to know about the Women's Car Rally (theme based) when it was just two days to go for the event. The team worked late into the night to deck up our car on our twin theme 'Sensitivity to Humanity'. It was exciting reveling in the cheers and applause of the crowds we passed, I felt like a mini-celebrity as we traversed the route from XIMB square through Ram Mandir square to the KIIT grounds! The icing on the cake was the First Runners Up prize for my team, even though we were a first time entrant. We owe the motivation and inspiration to our team and the planning and execution of our efforts to our beloved leader, Smt Samita Patra, President NMS.



Namita Sahoo
Bhubaneswar



Suparva Panda
Bhubaneswar

It was really an enlightening experience to participate in international women's day car rally 2020. In addition to emphasizing women power, it provided a platform for demonstrating creative teamwork in showcasing awareness about current problem of corona virus. I would like to thank our President Mrs. Sasmita Patra Madam for giving us this opportunity.

सोचो जरा

कैसी ये राजनीतिक अस्थिरता है, कैसी मची ये हाहाकार है।

सोशल मीडिया के सहारे कौन कर रहा हमारी शांति पर प्रहार है।।

हर दिन दंगों की आग में जला रहा है जामिया और जेएनयू।

शिक्षा के मंदिर में आखिर ये अशांति आई क्यों।।

देखो कैसी निराली शक्ति है हमारे देश के वोट में।

राम को भी खुद को साबित करने आना पड़ा कोर्ट में।।

रैलियों से बाँटा जाता है देशभक्ति का सर्टिफिकेट।

आम जन चुने तो किसे चुने, ये समस्या है बड़ी विकट।।

अब बॉलीवुड भी हर मुद्दे में घुस करता अपना प्रचार है।

नाखुश लोग कहते बाईकॉट करो किस का ये लोकतंत्र पर प्रहार है।।

महिलाओं के कपड़ों से उनके संस्कार को जाता है जाना।

पर उन मासूमों का क्या जिन्होंने अभी डायपर से ज्यादा कुछ नहीं पहचाना।।

बलात्कारियों को फाँसी में देरी मीडिया में खलबली मचाती है।

तो वहीं इनका इनकाउंटर, ह्यूमन राइट वालों के बीच आग लगाती है।।

दो पार्टियाँ चुनाव लड़ती हैं उठाकर एक मुद्दे की बात।

दूसरे दिन जब टीवी देखा तो वो चली गई किसी तीसरे के साथ।।

जिसको हमने वोट दिया वो तो निकला बेईमान।

और सोशल मीडिया पर करते रहे मैं हिंदू तू मुसलमान।।

इतिहास के पाठ्यक्रम बदल जाते हैं बदलती सरकारों के साथ।

कोई कहता अकबर था महान, तो कोई बताता शिवाजी की बात।।

यही आज हमारे देश की राजनीति, यही मीडिया की सच्चाई है।

आम जन करे भी तो क्या करें, एक तरफ कुआँ तो दूजी ओर खाई है।।

ये राजनीति ये मीडिया भरी दोपहर की है वो परछाई।

जो कड़ी धूप आते ही हो जाती है पराई।।

जरूरत में जो साथ दे वही है दोस्त वही है भाई।

फिर चाहे वो हिंदू मुस्लिम हो या सिख इसाई।।



स्वाति तिवारी
अनुगुळ

कोरोना से न डरना

कोरोना से नहीं डरना है,

इसे सचेत रहकर भगाना है।

हाथ-मुँह साफ रखना है,

सैनिटाइज़र न सही, साबुन से धोना है।

हमेशा गर्म पानी है पीना,

बासी भोजन से परहेज है करना।

खाली पेट तुलसी-पत्ते ग्रहण करना,

अदरक-लहसुन-हल्दी का सेवन भोजन के साथ करना।

फ्रिज से अपने को दूर रखना है,

सुबह की धूप को गले लगाना है।

आहार व व्यवहार से बदलाव लाना है,

अपनी प्रतिरोधक शक्तियों को बढ़ाना है।

संयम बरतना है,

दुर्योग को संयोग बनाना है।

बहिर्जगत से अपने को दूर रखना है,

समय का सदुपयोग करना है

आसन-प्राणायाम, ध्यान व साधना से

अपने को अंतर्मुखी बनाना है।

कोरोना से नहीं डरना है,

इसे सचेत रहकर भगाना है।

निकिता पंडा
दामनजोड़ी



International Women's Day Celebration at Nalco Corporate Office

International Women's Day was celebrated on 7th March 2020 at NALCO Corporate office. The program was jointly organised by members of the NALCO Mahila Samiti & the women employees of NALCO Corporate Office and attended by a number 9 conians along with the members of NALCO Mahila Samiti.

The function was graced by eminent Odia writer Smt. Manorama Mohapatra as Chief Speaker & noted educationist Smt. Nadia Moghbelpour as Speaker in the august presence of top management of NALCO.

The glittering ceremony at the Corporate Office Auditorium had an eclectic mix of lectures by celebrities, skit on young achievers "Andhakara re Alok" felicitation of achievers in life & sports, mesmerising dance & poem recitals. The event was envisaged and conveyed by Smt. Sasmita Patra, President, NMS, conceptualised & directed by Smt. Sabita Patnaik.

The celebrations took off with a skit based on the life of Ms Tapaswini Das, the first visually impaired OAS Officer of Odisha, who cracked the prestigious OPSC exam at her first attempt. The skit was so well directed & performed by young artists that it was highly appreciated by the audience. The very presence of Ms Tapaswini Das & her inspiring address to the august gathering lent credence to the skit. Ms Das, accompanied by her proud parents were felicitated by Shri Sridhar Patra, CMD NALCO & Mrs Sasmita Patra, President – NALCO Mahila Samiti.

Speaking on the theme for the year, "I am Generation Equality: Realising Women's Rights", Ms Manorama Mohapatra, exhorted the women participants to scale newer heights & perform their duties as equals along with men. In her charismatic style, the inspiring speech was peppered with lines from her own poems as she motivated the ladies to realise their cherished dreams.

Ms Nadia Moghbelpour, spoke at length on the evolution of women's rights. She compared women & men as the two wings of a mythical bird called humanity. The bird can soar high, only with equal flaps & rhythm of the two wings – women & men.



Shri Sridhar Patra, CMD NALCO, addressed the august gathering reiterating that women & men are equal. He opined that the word man is within woman and hence they are complementary to each other in the journey of life. He dwelt on Hindu mythology that has accorded great importance to women, be it in the form of Durga, Kali, Lakshmi or Saraswati. He expressed his optimism about present generation that promotes gender equality not only in workplace but also at home.

On this occasion, the Jan-Mar 2020 issue of Sanginee, the quarterly magazine of NALCO Mahila Samiti, was released by Mrs Sasmita Patra, President – NALCO Mahila Samiti in the presence of Smt Gayatri Balasubramanyam, Mrs Sunita Mahapatro, Smt Sabita Pattanaik & Mrs Shagufta Jabeen.

A short Hindi poem recital on the changing role of mother by Mrs Shagufta Jabeen and scintillating dance performance by young ladies of the NALCO fraternity, depicting the varied roles of women were other major attractions of the event.

The program was a huge success not only for power packed performance & huge gathering of well-wishers but also for the key take-aways in terms of pearls of wisdom shared by the eminent speakers & the indomitable spirit exhibited by living legends.

Shaswatee Mohanty
Bhubaneswar

"नालको की महिला खिलाड़ी - नवरत्नों के रत्न"

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर निगम कार्यालय की नौ महिला खिलाड़ी नवरत्नों को सम्मानित किया गया। इस स्तंभ के अंतर्गत इनमें से कुछ के अंतर्भूत के सच और संदेश को प्रस्तुत किया जा रहा है। नालको भारतीय संस्कृति के बीज वाक्य "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः का हमेशा से ही पालन करता रहा है। इस अवसर पर सम्मानितों में श्रीमती अनुराधा बिश्वाल, सुश्री श्रद्धांजली सामंताराय, श्रीमती रंजिता महांति, श्रीमती गीतांजली सामंताराय, श्रीमती मधुमीता शतपथी, सुश्री अपराजिता गोछिकर, श्रीमती सुनीता लाक्रा, सुश्री नमिता कबाट, सुश्री दमयंती मुर्मू रहें।



I am proud to be a Nalconian. I would like to thank NALCO for supporting me through out my career. I am Odisha's first lady who represented India in Sydney Olympics, 2000. Being the current National record holder in 100 mts Hurdles, I have bagged gold medals in Open Asian Athletic Championship, Thailand, in SAF games, Colombo etc. I have successfully completed 25 years in Current national record holder since 2002. In my career I am 7 times national record holder sports Career which includes 84 gold medal, 52 silver medals and 40 bronze medals. I encourage the youngsters to chase their dreams, have patience do hardwork and dedication, "Rome was not built in a day" - have patience to get success. If you fail in your attempts don't get disheartened as Failure is the Pillar of success.

Anuradha Biswal
Sports Department

मैं सर्व प्रथम अपनी सफलता का श्रेय नालको को देना चाहती हूँ तथा मुझे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस में, कंपनी की तरफ से सम्मानित किए जाने से गर्व अनुभव करती हूँ तथा सबको यह अनुरोध करती हूँ कि आप अपनी दिनचर्या में व्यायाम जरूर शामिल करें, नालको खेल को प्रोत्साहित करता आया है इसलिए हम नालको एवं देश का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले आये हैं और आगे भी हम इसी तरह कीर्तिमान स्थापित करते रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे हम तो स्वस्थ रहेगा देश,



श्रद्धांजली सामंताराय
विभाग - क्रीड़ा



I had started playing soccer at the age of 15 and today I am 42. I hung my boots at the age of 32. I played as the goalkeeper of the Odisha state team from the year 1992 and went on to become the goal keeper for the India women's football team in the year 1997 and was the goalkeeper of the national team till the year 2009 and represented India in Germany, Phillipines, China etc. I am the winner of state award, NALCO award etc. before getting the biggest award of my life i.e. a job in NALCO in the sports quota in the year 2003. During my job, NALCO supported me to continue my career as a player till 2009 and further supported me to coach the Indian women's football team as a goalkeeping coach and I could help the women's team to get a gold and become the champions in SAFF Asian championship in 2014. I also got as certified by FIFA grassroot trainer to train the aspiring children from the age 10 yrs and senior Indian team as I am a holder of C license for coaching. I am proud to be an employee of NALCO and NALCO has been a partner of my success story in my career as a soccer player.

Ranjita Mohanty
Sports Department

सर्व प्रथम मैं नालको को धन्यवाद देना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर, अपनी कंपनी की तरफ से सम्मानित किया जिससे मैं गर्वित एवं हर्षित अनुभव करती हूँ तथा सबको यह अनुरोध करती हूँ की अपनी दिनचर्या में व्यायाम जरूर शामिल करें जिससे न केवल आप स्वस्थ रहेंगे बल्कि समाज भी स्वस्थ बनेगा। खेल सबको एकजुट रखने के साथ-साथ अनुशासन में रखने में एक अहम भूमिका अदा करता है।



गीतांजली सामंताराय
विभाग - सिस्टम

COOKING COMPETITION

Mrs. Chef 2020....

A very unique and exciting cooking competition was organised for the members of Nalco Mahila Samiti at Bhubaneswar. The President of NMS Mrs Sasmita Patra challenged the members with her innovative idea for the title of Mrs Chef 2020. The theme included preparing a healthy lunch box for two persons within a budget of Rs. 100.00 and a time limit of 20 minutes. Only one induction heater was provided. Members had to form teams of three each. The aim of the competition fulfilled not only the culinary skills of the members but also displayed involvement, team spirit and determination to complete the given task in the allotted time. Mrs Radha Basu, Mrs Smita Tripathy and Mrs Kalpana Paswan bagged the title of Mrs Chef 2020 with their cuisine "Anada Bhoga".



Smita Tripathy
Bhubaneswar



Radha Basu
Bhubaneswar

"Mrs. Chef 2020" was an exciting and cheerful event to remember. It was a difficult challenge to prepare a lunch box for 2 persons in a time limit of 20 minutes and with a budget of INR 100, that too using only one induction stove. However, with the support of my teammates Mrs. Kalpana and Mrs. Smita, it was a pleasant surprise and equally shocking to have emerged as winners of this competition. I sincerely thank our President Ma'am Mrs. Sasmita Patra for having proposed and host this incredible event. I hope such innovative ideas and events continue to be brought forth by members of our club.

A very nice experienced of team work, presentation of food and how to cook quality food within the time limit. We were under pressure to complete on time. It was a surprise that all 8 teams completed their task within the time limit. All the participants were eagerly waiting for the result. After the declaration of the result, I was shocked that our team was the winner. Till today I still can't believe myself that I did this job perfectly. I must say that "DARR KE AAGAY JEET HAI". I would like to thank our Nalco Mahila Samiti President Mrs. Sasmita Patra Madam for giving us this opportunity and providing us platform to experienced such an innovative and mind blowing competition.



Kalpana Paswan
Bhubaneswar

सत्तू शर्बत

सामग्री (एक गिलास बनाने के लिए)

चना सत्तू - 1 बड़ा चम्मच, भुना जीरा पाउडर/जल जीरा पाउडर - 1 छोटा चम्मच, नींबू का रस - 1 चम्मच, चीनी - 1/2 चम्मच, काला नमक - 1/4 चम्मच, पुदीना पत्ती - 1 चम्मच कतरी हुई, नमक - स्वादानुसार, पानी - 1 ग्लास ठंडा

विधि

एक बड़े ग्लास में सभी सामग्री को थोड़े पानी के साथ घोल लें। इससे सत्तू में गाँठें नहीं बनेगी। फिर बाकी बचे पानी को भी ग्लास में डाल दें। मिलाने के लिए ब्लेंडर का भी उपयोग कर सकते हैं। पुदीने के पत्ते और नींबू के कतरे से सजा कर पेश करें। मीठा शर्बत बनाने के लिए नमक और काला नमक की जगह गुड़ पाउडर या शहद/खजूर सिरप का उपयोग कर सकते हैं।



फायदे

यह प्रोटीन और फाइबर से भरपूर, सभी उम्र के लोगों के लिए उपयोगी एक शीतल ऊर्जादायक और स्वास्थ्यवर्धक पेय है। यह वजन कम करने में बहुत सहायक है। यह गर्मियों में लू लगने के खतरे को कम करता है साथ ही पाचन संबंधी समस्याओं को भी दूर करता है। यह मधुमेह और उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए भी उपयोगी है।

शारदा मिश्र एवं कामना सिंह
भुवनेश्वर

चोको मोको मोदक

मोदक, महाराष्ट्र में खाया जाने वाला गणेश जी का सबसे प्रिय भोजन है। पारंपरिक विधि से बनाने के अधिक समय और सधे हुए हाथ की ज़रूरत होती है। आधुनिक युग की भागमभाग और कुछ नया करने की चाहत में मैं आपके साथ बहुत ही कम मेहनत और 10 मिनट में झटपट तैयार होने वाली एक स्वादिष्ट और सरल रेसिपी साझा कर रही हूँ जो बच्चों को ड्राई फ्रूट्स और भुनी मूँगफली, तिल और तीसी जैसे पौष्टिक आहार खिलाने का ज़रिया बन सकता है।

सामग्री

ओरियो (Oreo) बिस्कुट वनीला फ्लेवर - 2 पैकेट (10 ₹ वाला), भूना मूँगफली - 1 टेबल स्पून, काजू बादाम, अखरोट - 1 टेबल स्पून, किशमिश (optional) - 1 चाय का स्पून, टूटी-फ्रूटी - 1 चाय का चम्मच, चीनी - 1/2 चाय का चम्मच (optional), ताजा मलाई/क्रीम - 1 चाय का चम्मच, घी - 1/2 चाय का चम्मच (मोल्ड में लगाने के लिए)

विधि

सबसे पहले बिस्किट से क्रीम को अलग कर एक कटोरे में रख लें। मूँगफली और ड्राई फ्रूट्स को चटनी जार में

डालकर धीरे से मध्यम स्पीड पर मोटा चूर बना लें। अब बिस्कुट को 2-3 टुकड़ों में तोड़कर मिक्सचर जार में मध्यम स्पीड पर महीन पाउडर कर लें। फिर उसमें क्रीम और चीनी पाउडर डालकर 30 सेकंड के लिए ग्राइंड कर लें। अब बिस्कुट के चूर



और ड्राई फ्रूट के चूर में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में क्रीम डालकर कुछ सेकंड के लिए फिर ग्राइंड कर ले और एक कटोरे में निकाल कर रख ले और उसमें टूटी-फ्रूटी और किशमिश को अच्छी तरह मिक्स कर लें। मोदक बनाने वाले साँचे में हल्का घी लगाकर इसमें मिश्रण को थोड़ा दबाते हुए अच्छे से भर लें और चिकना कर लें। अब हल्के हाथों से मोदक को निकाल कर बाहर रख लें और बाकी मिश्रण के लिए भी यही प्रक्रिया दुहराएँ। बच्चों के साथ बड़ों का भी मन मोहने के लिए चोको-मोको मोदक परोसने के लिए तैयार है।

अभिनीता सिंह
भुवनेश्वर

POST COVID-19 INDIA: ROAD TO RECOVERY

India's choice to opt for a full lockdown on account of the ongoing COVID19 pandemic crisis was a difficult one, as the country was already in slowdown mode – amounting to just 4.7% growth in the third quarter of 2019-20. But currently, what matters now is how India crafts an exit strategy for all business activity once the lockdown is lifted. It will be an enormous task to restart the economy before industrial paralysis, job losses & dried-up cash flows become another cause of death and despair. Former RBI Governor Raghuram Rajan correctly said that India is facing “perhaps its greatest emergency since Independence”. The interconnected nature of modern economies means that even if the lockdown is lifted in phases, it is crucial for interdependent industries to come online sequentially. However, the caveat is that while the Govt can be looked onto for support, the private sector needs to play a big role as well.

A 'one-size-fits-all' approach is not what we should be looking at. Some sectors need to resume operations immediately – such as agriculture, which contributes around 14% to the GDP while employing about 50% of the population. With the Rabi crop cycle approaching its end, all states must leave no stones unturned to ensure a successful harvest as that will be the first step to ensure food security & income for the rural masses. Initiatives like doorstep crop procurement, expedited curfew passes for farmers, laborers and machinery suppliers, as well as plans for staggered entry permits for farmers to local mandis must be encouraged at the State Govt & Central Govt levels. Broad industry verticals may face the following challenges and steps mentioned could help India revive itself on the path to recovery:

Apparel, textiles & MSMEs

Impact: With the lockdown in China, man-made fibre imports would end up costing more, thus pushing up the prices of finished goods. As textile

exports decline for the next few quarters, there would be an estimated 10-12% dip in apparel production.

Prescription: The Govt could look at providing tax reliefs to encourage spending; reduction of interest rates would facilitate loans for credit worthy MSMEs; extend the exemption of MSMEs from NPA classification till June; if possible then Govt could share salary burden to an extent.

Auto and Auto Components

Impact: Global slowdown to affect exports; disruption in raw material supply from China; big-drop likely in consumer vehicle purchases would ultimately lead to production shutdowns across the country.

Prescription: Govt should relax norms and allow OEM (Original Equipment Manufacturers) to operate with existing approvals/licenses for 6 more months; postponement of BS-VI emission norms by at least a quarter to accommodate the sluggish industry demand; Govt might also look at offering GST rate cuts or defer GST payments.

Aviation and Tourism

Impact: Projected loss of INR 8,200 crore due to restricted foreign tourist arrival in India; widespread cancellation due to the ban on domestic & international travel might lead to severe layoffs, salary cuts in white & blue-collar jobs in the industry.

Prescription: Govt could rationalize VAT on Aviation Turbine Fuel (currently up to 30%) to a maximum of 4% for a period of 6 months to help airlines optimize their costs; considering long-term GST holiday for tourism & travel services; allowing consumers to avail their bookings up to 12 months later would also help boost the industry by plugging in extra revenue.



Real Estate & Construction

Impact: Supply of raw materials like cement, steel and labourers will be hit; lower incomes, salary cuts or higher unemployment will also cause sharp fall in demand in residential, hospitality & retail segments; global effect might also cause the FDI flow into commercial segment to reduce.

Prescription: Relaxation of RERA compliance in projects for up to 6 months; fix the lending rates for realty projects at a lower repo rate; extension of NPA classification beyond 90 days for stressed projects would also be beneficial.

Consumer Goods & Retail

Impact: Demand for non-essential goods except grocery and food would be sluggish; import of raw materials will face hurdles due to global level shutdowns across various geographical locations; major cash and liquidity constraints.

Prescription: Provision of rebate on repayment of loan interest and principal; get banks, NBFCs to extend credit limits for small retailers; open markets/malls in a phased manner while continuing to observe social distancing norms.

Lastly, the Govt's revival plan should be far-reaching & no-holds-barred. It should aim at getting businesses not just back on track, but flourishing, ensuring that they create employment, putting money into the hands of those at the bottom of the pyramid so that they can get through the rest of the year without worrying about getting hungry. The revival plan could be very well used to fast track India's growth to becoming a significant global player in the post-COVID19 world economy.

CA Shalini Jammula
Bhubaneswar

“जब टूटता है दिल किसी स्त्री का...”

जब टूटता है दिल किसी स्त्री का
क्या कुछ वो छोड़ जाती है।
अपनों की फिकर करना, या माँ सा दुलार,
अपना साज श्रृंगार, या वो अपने मन का बाज़ार।
क्या कुछ वो छोड़ जाती है।
अपना रूठना, या अपने मन को मनाना,
आपका इंतज़ार, या वो शाम की चाय की
गरमाहट को रिश्तों में समेटने का ऐतबार।
क्या कुछ वो छोड़ जाती है।
कम शब्दों में ज्यादा बोलना,

या नम आँखों की भाषा में समझा देना,
वो प्यार भरा मनुहार, या वो बिन कहे
समझ लेने का आभार, वो शरमा कर झुक जाना
या अपना समझ सब दे जाना,
क्या कुछ वो छोड़ जाती है।
जब टूटता है दिल किसी स्त्री का,
क्या कुछ वो छोड़ जाती है।

प्रियंका पॉल
अनुगुळ

कोरोना: एक संदेश

चीन में कोरोना के प्रकोप से ज़्यादा भारत में सोशल मीडिया पर संदेश वायरल हो रहे थे। कुछ आने वाली आशंका से आतंकित थे, कुछ अपने और परिवार का सोच कर चिंतित थे और कुछ स्वयं को सात्विक भारतवासी बताकर चीन को कोसने से बाज़ नहीं आ रहे थे।

“अच्छा हुआ, और साँप -बिच्छू खाओ। अरे कीट-पतंगों और चमगादड़ तक को नहीं छोड़ा। ये तो होना ही था। अब भुगतो!!”

“अरे भैया, ये सिर्फ अलाय-बलाय खाने से नहीं हुआ है। ये लोग विश्व युद्ध की तैयारी में ये जैविक अस्त्र तैयार कर रहे थे। ऊपरवाले ने वो मार मारी के पूछो मत। दूसरों के लिए गढ़वा खोदोगे तो खुद ही गिरोगे, ये तो सब जानते हैं।”

हर खास-आम इस समय टिप्पणी करने से बाज़ नहीं आ रहा था। पर समाज के कुछ जागरूक लोग आने वाले खतरे को भाँप कर लोगों को सचेत करने की तैयारी कर रहे थे। वे एक नुक्कड़ नाटक के द्वारा लोगों तक ये संदेश पहुँचना चाहते थे। अर्यमन उस समूह का मुखिया था। लेखन का भार उसी पर रहता था। वो लोग कल से अलग अलग जगहों पर नाटक का मंचन करने वाले थे। पर चीन के बाद इटली में भी इसके फैलने और प्रचण्ड रूप धारण करते ही भारत सरकार हरकत में आ गयी और दिल्ली, भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड आदि कई राज्यों के स्कूल कॉलेज मॉल, सिनेमाघर, जिम आदि यकायक बन्द हो गए। अब बच्चों की छुट्टियाँ हो गई थीं यानी माताओं का सर दर्द!! दिन भर सब घर में बंद रहे भी तो कैसे। शाम होते ही बच्चे जैसे रस्सी तुड़ा कर बाहर भागते और माताएँ डण्डा लेकर उनके पीछे। अब उस जागरूक समूह ने सोचा कि इसी वक्त कम से कम अपने आस पास तो कुछ जागरूकता फैलाएँ। वो लोगों को गाकर और नाच कर समझने लगे के अपनी सफाई कितनी ज़रूरी है।

“सुनो सुनो तुम एक कहानी, मेरी ज़बानी तेरी ज़बानी”
डफली की थाप पे वो सबको आकर्षित कर रहे थे।

“मेहरबान कदरदान... हम सबको इस वायरस से डरने की ज़रूरत नहीं है।

* ये वायरस छूने से फैलता है।

* अपने हाथों को बार-बार धोकर हम इसे मुँह और आँख तक जाने से रोक सकते हैं।

* हमें एक दूसरे से कम से कम एक मीटर की दूरी पर रहना चाहिए ताकि संपर्क से ये दूसरे लोगों तक न पहुँचे।

* विदेश से आये किसी भी संबंधी को घर में कम से कम 14 दिनों तक अलग कमरे में ही एकांतवास में रखें।

* बाहर से खाना, कूरियर आदि न मँगाया जाए तो अच्छा है।

* कम से कम लोगों के संपर्क में आएँ। अधिकतर घर का काम स्वयं करें।

मोबाइल को भी दिन में कई बार स्वच्छ करें और जितना हो सके स्पीकर मोड में बात करें।”

अब इतना सुनना था कि शर्मा काकी बीच में ही बोल पड़ी।

“अरे ये तो ऐसी बातें बोल रहा है जैसे हम सब गंदे लोग है। सफाई कैसे होती है हमें क्या पता नहीं।”

“ठीक कह रही हो बहन, हम क्या अछूत हैं जो दूसरों के संपर्क में न आएँ।” महंती चाची ने सुर में सुर मिलाया।

“अब कोई कितनी देर घर के अंदर भी अपनो से दूर रह सकता है। एक तो बच्चों ने नाक में दम कर रखा है उसपर से इनकी बातें,” ज़ीनत चाची ने गुहार लगाई।

“अरे बहनों, जाने दो इनकी बातों को। इनकी सुनेंगे तो कोरोना तो बाद में आएगा पहले बच्चों और घर के काम के आतंक से मर जाएँगे।” पंडा आँटी ने विद्रोह का बिगुल बजाया।

“और क्या, हमें पता है, हमें क्या करना है। इन सब बातों से ‘हमें क्या’” सारी माताओं ने सहमति भरी।”



उनकी बातें सुनकर अर्यमन और बाकी नुक्कड़ नाटक वालों का मन बैठने लगा था । क्यों हमारे यहाँ किसी बात को समझने के पहले उसका विरोध करने की आदत है हम सब की ? क्यों हम हमेशा आखरी समय में सचेत होते हैं ? सही समय पर सही कदम उठाने से **फोणि** जैसे तूफान से हमारी सरकार ने लोगों की जान बचाई थी सब क्यों भूल गए ?

अचानक तेज हवा चलने लगी और धुआँ सा उठने लगा । सब के भय का ठिकाना न रहा जब बड़े आकार की कंटीली गेंद नुमा कोई चीज़ ऊपर हवा से उनके सामने पार्क में उतरी । सब भय से काँपते हुए सोच रहे थे कि आखिर ये है क्या ? सब की घिग्घी बँध गई जब उस गोलाकार गेंद नुमा जीव ने बोलना शुरू कर दिया ।

“ हा हा हा हा क्यों, नहीं पहचानते मुझे ? मैं हूँ कोविड-19....कोरोना वायरस ...जिसके बारे में ये लोग तब से तुम्हें गला फाड़-फाड़कर समझा रहे हैं ,लेकिन तुमलोगों के कान पर जैसे जूँही नहीं रेंग रही । क्या सोच रहे हो तुमलोग कि मुझे इस तरह खुली आँखों से कैसे देख पा रहे हो ? अरे मनुष्य ! अब भी समझ में नहीं आया कि मेरा धरती पर आना परमात्मा की इच्छा है । कुपित है वो सृजनहार । वो चाहता है कि तुम मुझे देखो इसलिए उसने मेरा आकर इतना विशाल कर दिया है ।

आज मेरे आतंक से तुम सब लोग इतने डरे हुए हो लेकिन परमात्मा से भय खाना तुमने छोड़ दिया है। दुनिया के कार्य और विकास में तुमलोग इतना रम गए हो कि जीने का तरीका क्या है ये भूल गए हो । अरे सभी धर्म तुम्हें जीने का तरीका ही सिखाते हैं किंतु तुम विकास के नाम पर अपने-अपने धर्मों को पीछे छोड़ आये हो । परमात्मा की पूजा धर्म नहीं सिखाता बल्कि प्रेम और सौहार्द से रहना सिखाता है , अपना-अपना कर्तव्य करना सिखाता है । किंतु पूरे विश्व के देश आज प्रभुत्व पाना चाहते हैं और भीतर-भीतर एक दूसरे से दुश्मनी पालते हैं । ऊपर से दोस्ती का नाटक कर भीतर से जड़ें काटना कहते हैं । ऊपरवाले को विश्वास था कि तुम सब समय रहते सुधर जाओगे पर ऐसा हुआ नहीं । इसीलिए आज उसने ऐसी स्थिति कर दी है कि पूरे विश्व में किसी भी धर्म का एक भी पूजा स्थल खुला नहीं छोड़ा,

तुम्हें उसे बंद करने को बाध्य कर दिया है । और करे भी क्यों न ? नमाज़ पढ़ने, पूजा करने, घंटी बजाने या मोमबत्ती जलाने से उसकी अर्चना नहीं होती । तुम्हें उसने साँस लेने को शुद्ध हवा, रहने को स्वच्छ धरती, पीने को अमृत जैसा जल दिया किंतु तुमने सबको गंदा कर दिया । तुम्हें रिशतों में बाँधा मगर तुम उन्हें निभाना भूल गए । माँ-बाप अपना कर्तव्य भूल चुके हैं । केवल पैसा कमाना और बच्चों को उनकी इच्छा की वस्तुएँ देना ही प्यार नहीं । देना ही है तो उन्हें अपना समय दो । घर का शुद्ध भोजन दो । अभी बच्चों की चार दिन छुट्टी नहीं हुई कि माँओं ने हाय-तौबा मचा दी । परिवार परिवार नहीं रह गए, जैसे अजनबियों के रहने की जगह हो गए हों । पैसा कमाना ही एकमात्र लक्ष्य रह गया है । अमीर और अमीर और गरीब और गरीब हो गए हैं ।

पर अब भी देर नहीं हुई है । सुनो ये लोग क्या कह रहे हैं । तुम्हें पुराने दिनों में लौटने को कह रहे हैं । स्वच्छता का ध्यान रखो । जितनी ज़रूरत है उतना ही घर से बाहर जाओ । घर का खाना खाओ । घर में समान और अनाज इकठ्ठा करने की जगह तुम्हारे यहाँ तुम्हारी सेवा करने वाले चाकरों का भी खयाल रखो । परोपकार करो । आज जब तुम्हारी जान पर बन आई हैं तो विश्व के सारे देश सबकुछ भूल कर बस जान की परवाह कर रहे हैं । दुश्मनी भूल गए हैं । परमात्मा भी यही चाहते हैं । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का जो नारा भारत ने दिया है वो साबित करने के लिए तत्पर हो जाओ वरना विश्व का संहार निश्चित है ।”

कोरोना का वायरस गुस्से से काँप रहा था और वहाँ पर खड़े सबके पसीने छूट रहे थे । अचानक वो सबकी ओर उन्हें छूने को दौड़ा । सबके साथ अर्यमन भी दौड़ा और एक गड्ढे में धड़ाम से गिर गया । ज़ोर से वो चिल्लाया और चिल्लाते ही उसकी नींद खुल गयी । वो पसीने से सराबोर था । उसने एक बुरा सपना देखा था । परंतु उसे सारी बातें साफ-साफ समझ में आ गयी थीं । लोगों को सतर्क करने का उसका निर्णय अब निश्चय में बदल चुका था ।

शगुफ़ता जबीं
भुवनेश्वर

May 1 : Prevent Child Labour

It is rightly said by Sophocles that without labor nothing prospers. Labour force has the capability to define the growth and development of any country. It plays the most important role in any economic activity. Hence every year we celebrate International Labour Day to honour the contribution of working men and women. It is largely celebrated on 1st day of May because the Labour Union and the American Federation of Organized Trades demanded 8 hour working period on this day in 1884, and the demand came to force on 1st May, 1886., hence also celebrated as May Day. In India, the holiday is also celebrated as **Antarrashtriya Shramik Diwas**.

But this labour doesn't indicate child labour which is currently prevailing in the world especially in India at a higher rate.

Almost one third of the population consists of children. Therefore they need to be cared and protected. Children are important component in social structure and potential future that carries to the culture. Now the question arises who is a child or who can be considered as a child?

"The child is a soul with a being, a nature and capacities of its own, who must be helped to find them, to grow into their maturity, into a fullness of physical and vital energy and the utmost breadth, depth and height of its emotional, intellectual and spiritual being; otherwise there cannot be a healthy growth of the nation."--- P N Bhagawati, Former CJI.

Whether children have any rights? Yes. Of course, like other human beings, even children have certain rights. They shall not be deprived of it. The children's right is a world widely accepted phenomenon. Moreover, UN adopted the Declaration of the Rights of Child. These include right to education, health care, basic needs of food as well as special care and protection. Despite having all these rights and knowing the fact that children shouldn't work, child labour still persists in many parts of India.

Reasons for Child Labour

There are many reasons for the existence of child labour and it varies with place to place. The main causes are: poverty, low wages than adult,

unemployment, absence of schemes for family allowance, migration to urban areas, large family size, children being cheaply available, nonexistence of strict provisions for compulsory education, illiteracy, ignorance of parents and traditional attitudes.



Consequences

Child labour hinders the education – which affects their future as lack of education causes unemployment, and thus results in poverty. It affects the child's health and growth process. The children are endangered to accidents and other injuries at work. It also results in emotional negligence such as depriving the child of family love and affection which results in hopelessness and loneliness as well as physical negligence such as not giving sufficient food, shelter, medical treatment and clothing.

Since 1997, countries around the world have shared knowledge on policies and good practices, and have committed to eliminate child labour in a series of global conferences held in Oslo (1997), The Hague (2010) and Brasilia (2013). The Act that regulates child labour in India is "The Child Labour (Prohibition and Regulation) Act, 1986 which defines a child as any person who has not completed his fourteenth year of age and prohibits him or her from working in any occupation. We have a National Policy on Child Labour, formulated in 1987, to focus on rehabilitating children working in hazardous occupations. Many NGOs like Bachpan Bachao Andolan, CARE India, Child Rights and You, RIDE India etc. have been working to eradicate child labour in India.

However, these efforts have been inadequate to eradicate Child labour. While significant progress has been made globally in the fight against all forms of child labour between 2000 and 2012, with ILO constituents having increasingly adopted and implemented integrated strategies and coordinated policies to combat child labour but the goal that was set to eliminate it in its worst

forms by 2016 was not achieved.

Four systemic failures in eradicating Child labour

The ILO points to four systemic failures that underpin the lack of progress.

- The absence of national legislation to give effect to global conventions on the employment of children in hazardous industries, as well as on the minimum age of work.
- The lack of harmony between global commitments and domestic priorities.
- Incoherency between laws that prescribe a minimum age for employment and those for completion of compulsory school education. It also means that the expansion of quality universal basic education has to extend beyond the fulfillment of statutory provisions.
- Lack of effective labour inspections in the informal economy.

A new ILO report says improving legal protections, labour market governance, social protections, access to quality education and social dialogue between governments, the social partners and other stakeholders are critical

aspects in battling child labour. Legislation alone cannot eradicate child labour. There is also a need for stronger labour inspection systems as it rarely reaches workplaces in the informal economy, where most child labour is found. Well-designed labour market policies focused on where most child labour persists – in the rural economy and the informal economy – can help curb the demand for child labour. At the same time, establishing regulatory frameworks is critical to addressing child labour in supply chains. Accelerating progress towards universal social protection is key, as social protection helps prevent poor households from having to rely on child labour as a coping mechanism.

However the most powerful weapon to stem the flow of school-aged children into child labour is to improve access to and quality of schooling.

Child Labour is like a termite which is affecting the strength and growth of Child as an individual and as a citizen and future of the country. It has to be eradicated from roots so that the children of the country can have better future and help in the development of the country. After all **Padhega India, Toh Badhega India.**

Geeta Rani Mishra
Angul



ମୁକ୍ତିର ସ୍ୱର

ଘଟଣା ନୁହେଁ, ବରଂ ଏସବୁ ଏକ ଅଘଟଣ
ଏକ ବିପର୍ଯ୍ୟୟ ଏ ଏକାନ୍ତବାସ ।
ଅନିଶ୍ଚିତ ଭବିଷ୍ୟତକୁ ଚାହିଁ ଭୋଗୁଥିବା ନିର୍ବାସନ
ମୁକ୍ତିର ଅପେକ୍ଷାରେ ଥିବା ବନ୍ଦୀର
ଏକ ଦୀର୍ଘ ନିଃସଙ୍ଗ ନୀରବତାର ଅନ୍ଧକାର ରାତ୍ରି ।
କିଛି ଉଚ୍ଚାରଣ ଅପେକ୍ଷା ଅନୁକାରିତ ନୀରବତା ।
ମଣିଷକୁ ଭେଟି ଦେଇପାରେ ପାଟ ମୁକୁଟର ସିଂହାସନ
ଫୁଟାଇପାରେ ଫୁଲ ତା'ର ଅଜ୍ଞାତରେ
କିନ୍ତୁ ଆଜିର ଏ ନୀରବତା, ଏ ନିର୍ଜନତା, ଏ ଏକାନ୍ତ ବାସ ?
ଏତେ ଭୟ, ଏତେ ଆତୁରତା ?
ନା, ସହି ହେଉନାହିଁ ଆଉ
ଖୁବ୍ କଷ୍ଟ କିଛି ନ କହି ବାରମ୍ବାର ମୃତ୍ୟୁକୁ ଦେଖିବା
ନିଜକୁ ମିଶାଇ ଅନାଗତ ସମୟର ହିସାବ କରିବା ।

କାହିଁକି ମଣିଷ ଆଜି ମୃତ୍ୟୁ ଭୟେ ଏତିକି କାତର
ନିଜ ଉପରେ ବିଶ୍ୱାସ ହରାଇ ଏତେ ବିଷାଦିତ ?
ବିଷ୍ଣୁ କାହିଁକି ତା'ର ଜୀବନର ସ୍ରୋତ ?

ଭୂମିକମ୍ପ, ପର୍ବତସ୍ଥଳନ, ବନ୍ୟା ଏବଂ ବାତ୍ୟାର ପ୍ରଳୟ
ଅବା ଘମାଘୋଟ ଯୁଦ୍ଧର ହୁଙ୍କାର ପରି
କେଉଁଠୁ ମାଡ଼ି ଆସିଲା ଏ ବିଦେହୀ ଭୂତାଶୁ ?
ଆତଙ୍କିତ ସାରାବିଶ୍ୱ !

ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗେ ହାହାକାର, ଖାଁ ଖାଁ ନଗ୍ର, ଜନପଦ
ଶୂନ୍ୟଶାନ୍ତ ବାଟ ଘାଟ, ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନର କୋଳାହଳ
ବିପଣୀ ବଜାର ।
ମସ୍ଜିଦ୍, ଗୀର୍ଜା ଏବଂ ମନ୍ଦିରରେ ବି ଅଭୂତ ନୀରବତା
ଧାର କଣ୍ଠରେ ଶୁଭୁଛି ମୁକ୍ତିପାଇଁ ପ୍ରାର୍ଥନାର ସ୍ୱର !

ନୀରବତା ଭଙ୍ଗ କରି
କାହାର ଏ କଣ୍ଠସ୍ୱର ପ୍ରାଣେ କରେ ଜୀବନ ସଂଚାର ?
ଅନ୍ଧସ୍ଥଳ ଦୋହଲାଇ ଦେଲାଭଳି
ଇଏ କେଉଁ ମନ୍ତ୍ରଧ୍ୱନି ଜାଗ୍ରତ କରି ତୋଲୁଛି
ମଣିଷକୁ: ବିଶ୍ୱକୁ:



ସୁଖ ଦୁଃଖ ସ୍ଥାୟୀ ନୁହେଁ,
ସ୍ଥାୟୀ ନୁହେଁ ରାତିର ଅନ୍ଧାର,
ଉଦିତ ସୂର୍ଯ୍ୟର ଆଭା ବିନାଶିବ ଦୁଃଖ ଘନଘୋର ।
ଏକାନ୍ତ ବାସରୁ ତୁମ ମୁକ୍ତି ଅନିବାର୍ଯ୍ୟ
ପୈର୍ବ୍ୟର ପରୀକ୍ଷା ଏହା
ବିଶ୍ୱର ମଙ୍ଗଳ ପାଇଁ
ଏହା ତୁମ ସାଧନାର କଷଟି ପଥର

ସ୍ୱୟଂପ୍ରଭା ରଥ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ଅକ୍ଷୟ ତୃତୀୟାର ମହତ୍ତ୍ୱ



ବୈଶାଖ ଶୁକ୍ଳ ତୃତୀୟାକୁ ଅକ୍ଷୟ ତୃତୀୟା ବା
ମନୋରଥ ତୃତୀୟା ମଧ୍ୟ କୁହାଯାଇ ଥାଏ । ଏହି ଦିନ
ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରାଯାଇ ଥାଏ, ତା'ର ଶୁଭ
ସମାପ୍ତି ହୁଏ । ଏହି ଦିନର ବହୁ ବିଶେଷତ୍ୱ ଅଛି ।

୧. ବୈଶାଖ ଶୁକ୍ଳ ତୃତୀୟାରେ ସତ୍ୟଯୁଗର
ଉତ୍ପତ୍ତି ।

୨. ଏହି ଦିନ ଅକ୍ଷିମୁଠି ଅନୁକୂଳ ହୋଇଥାଏ ।
 ୩. ଷଷ୍ଠ ଅବତାର ପର୍ଶୁରାମ ଦେବ ଜନ୍ମନ୍ତୀ ।
 ୪. ଗୀତ ଗୋବିନ୍ଦର ରଚୟିତା ଜୟଦେବ ଜନ୍ମନ୍ତୀ ।
 ୫. ତୁଳସୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବଳଦେବ ଜୀଉଙ୍କ ସହିତ ରେବତୀ ବିବାହ ଉତ୍ସବ ।
 ୬. ଏହି ଦିନ ଗଙ୍ଗାମାତାଙ୍କର ଧରାପୃଷ୍ଠକୁ ଅବତରଣ ।
 ୭. ମା ଅନ୍ନପୂର୍ଣ୍ଣାଙ୍କର ଜନ୍ମ ।
 ୮. ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଓ ସୁଦାମାଙ୍କର ମିଳନ ।
 ୯. ବ୍ରହ୍ମାଙ୍କର ମାନସ ପୁତ୍ର ଅକ୍ଷୟ କୁମାରଙ୍କ ଅବତରଣ ।
 ୧୦. ଶ୍ରୀ ବଦ୍ରୀନାଥ ଧାମର ଦ୍ଵାର ଖୋଲା ଯାଇଥାଏ ।
 ୧୧. ମହାଭାରତ ଯୁଦ୍ଧର ସମାପ୍ତି ।
 ୧୨. ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଚନ୍ଦନ ଯାତ୍ରା ଆରମ୍ଭ ଓ ଶ୍ରୀ ଚତୁର୍ଦ୍ଧାମୁର୍ତ୍ତିଙ୍କର ରଥ ନିର୍ମାଣ କାମ ଆରମ୍ଭ କରାଯାଇ ଥାଏ ।
- ତେଣୁ ଏହି ଅକ୍ଷୟ ତୃତୀୟା ଏକ ସ୍ଵୟଂସିଦ୍ଧ ଦିବସ ।

କମଳ ସାହୁ
ଅନଗୁଳ



ଓଡ଼ିଶାର ନବ ବର୍ଷ (ମହା ବିଷୁବ ସଂକ୍ରାନ୍ତି)



ଆସ ମୋର ବନ୍ଧୁ, ଆସ ମୋର ମିତ
କରିଛି ବଢ଼ିଆ ପଣା ।
ପଣା ସଂକ୍ରାନ୍ତିରେ ଯୁଆଡ଼େ ଯାଉଛ
ହୁଅନ୍ତି ଜମାରୁ ବଣା ।
ଦେଶୀ କଦଳୀକୁ କଞ୍ଚା ଛେନା ସାଥେ
ରାବିଡ଼ି ଦେଇଛି ଫେଣ୍ଟି
ଖଣ୍ଡ ବରଫରେ ଟିକେ ଚିନି ମାଖି
ଢାଳିଛି କ୍ଷୀରକୁ ଖାଣ୍ଟି
କୋରା ନଡ଼ିଆକୁ ପକେଇଛି ପୁଣି
ବେଲର ଶସକୁ ଛଣା
ଆସ ମୋର ବନ୍ଧୁ, ଆସ ମୋର ମିତ
କରିଚି ବଢ଼ିଆ ପଣା ।
ପଣା ପିଇକରି ପଣା ସଂକ୍ରାନ୍ତିରେ
ହୁଅନ୍ତି ଜମାରୁ ବଣା ।
ଖରା ବାଧୁବନି ପିତ ବଢ଼ିବନି
ମୁଣ୍ଡଟା ହୋଇବ ଥଣ୍ଡା ।
ପଣା ପିଇଦେଇ ଆରାମରେ ଥରେ
ବସିଯା ଘଡ଼ିଏ ପିଣ୍ଡା ।
ଓଡ଼ିଆମାନଙ୍କ ନୂଆ ବରଷରେ
ଭଲରେ ହେଉଥା ଗଣା
ପଣା ସଂକ୍ରାନ୍ତିରେ ପଣାର ମହତ୍ତ୍ଵ
କିଏ ଅବା ଜାଣିନି ଯେ ।
ସମସ୍ତଙ୍କୁ ମୋର ଶୁଭ ଅଭିନନ୍ଦନ ଏଇ ନବବର୍ଷର
ଏଇ ଓଡ଼ିଶା ବାସୀ
ଏଇ ଓଡ଼ିଶା ରାଇଜେ ।
ଏଇ ଓଡ଼ିଶା ନବବର୍ଷର ଶୁଭ ଅବସରରେ
ଜଣାଉଛି ମୋର ପ୍ରଣାମ
ଓ ପଣା ସଂକ୍ରାନ୍ତିର ଖୁସିଭରା ଅଭିନନ୍ଦନ ।
ଶିଖା ନାୟକ
ଅନଗୁଳ

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर में एवं आसपास के इलाकों में भी नालको महिला समिति भुवनेश्वर समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रसर रहती है। इसी तरह अनुगुळ व दामनजोड़ी की नालको महिला क्लब द्वारा भी संयंत्र व आवास के समीपवर्ती इलाकों में भी सक्रियता से समाज सेवा प्रदान की जाती है। इन सभी के सद्प्रयास का उद्देश्य सभी समुदाय के प्रत्येक आयुवर्ग तक लाभ पहुँचाना है। यहाँ एन एम एस के सद्प्रयास की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

भुवनेश्वर में



दामनजोड़ी आगमन के दौरान माननीय मंत्री महोदय का स्वागत करते हुए अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक



नए अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक का कार्यभार ग्रहण करते श्री श्रीधर पात्र का स्वागत करते हुए निदेशक (मा.सं.)



एन.एम.एस की नई अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्र का स्वागत



नालको महिला समिति में श्रीमती सुनीता महापात्र का स्वागत



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्घाटन



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विख्यात लेखिका श्रीमती मनोरमा महापात्र का सम्मान



विश्व हिंदी दिवस में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण



एन.एम.एस की तिमाही पत्रिका, "संगिनी" का विमोचन



एचडीएफसी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एन.एम.एस. की अध्यक्ष का सम्मान



एन.एम.एस. द्वारा "स्व संचालन/प्रचालन" कार्यशाला का आयोजन



मिसेज शोफ़ 2020 की विजेताएँ



गोपालपुर में एन.एम.एस. पिकनिक



एन.एम.एस. की अध्यक्ष द्वारा मिसेज शोफ़ 2020 की अतिथि निर्णायिका का सम्मान



एन.एम.एस. द्वारा एन आर टी सी में अनुसूचित बच्चों का मनोरंजन



नालको नगर में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी में एन.एम.एस.



एन.एम.एस. की अध्यक्षा द्वारा छत्रपुर के निर्धनों को मच्छरदानी का वितरण



कोविड 19 के दौरान दिहाड़ी मज़दूरों की सहायता

अनुगुल में



अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय का स्वागत



एन एम एस की अध्यक्षा का स्वागत



अनुगुल में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय के साथ अधिकारी गण



अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक को गार्ड ऑफ ऑनर



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

दामनजोड़ी



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का उद्घाटन



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
श्रीमति तुलावती मंडल को सम्मानित किया गया



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th June 2020. - Editor-in-Chief

